Q. तटस्थता वक्र विश्लेषण क्या है? इसकी सहायता से उपभोक्ता संतुलन की व्याख्या करें।
(तटस्थता वक्र / उदासिनता वक्र / अनाधिमान वक्र) Indifference curve.

Ans. उदासिनता या तटस्थता वक्र विश्लेषण की व्याख्या J. R. Hicks एवं R. G. D. ALLEN ने 1939 में अपनी पुस्तक Value and capital में प्रस्तुत की है। हिक्स का उदासिनता वक्र विश्लेषण मार्शल के उपभोक्ता व्यवहार की माप जो उपयोगिता को संख्यात्मक रूप में मापता है, को गलत बताते हुए उसका सुधारात्मक रूप प्रस्तुत करता है। अर्थात हिक्स ने बताया की उपयोगिता को मापा, जोड़ा या बताया नहीं जा सकता उसकी केवल तुलना की जा सकती है। हिक्स के अनुसार एक उपभोक्ता यह नहीं बता सकता की उसे वस्तुओं के विभिन्न इकाईयों से कुल कितनी मात्रा में उपयोगिता मिल रही है किंतु वह यह जरूर बता सकता है कि वह दो केले की तुलना में एक सेब को अधिक पसंद करता है या कम पसंद करता है या दोनों को समान रूप से पसंद करता है।

हिक्स एवं एलन द्वारा प्रतिपादित तटस्थता वक्र विश्लेषण का आधार क्रमसूचक प्राथमिकता है। इसके अनुसार उपभोक्ता विभिन्न वस्तुओं अथवा वस्तुओं के विभिन्न संयोगों को उनसे प्राप्त संतुष्टि के आधार पर एक क्रम बनाता है। बाजार में वस्तुओं की खरीदारी करते समय वह केवल अपने क्रम को ध्यान में रखता है कि किन वस्तुओं के संयोग से उसे अधिकतम संतुष्टि प्राप्त होगी।

Hicks, एवं Allen के अनुसार, प्रत्येक तटस्थता वक्र दो वस्तुओं के उन संयोगों को व्यक्त करता है जो उपभोगता को समान संतुष्टि प्रदान करते हैं। चूँकि एक अनधिमान वक्र (Indifference curve) पर स्थित सभी संयोग उपभोक्ता को समान संतुष्टि देते हैं इसलिए वह उनके चुनाव के प्रति उदासिन या तटस्थ होगा। अर्थात उसके लिए यह उदासिनता की बात होगी कि अनधिमान वक्र पर स्थित वस्तुओं का कोई भी संयोग उसे मिल जाए क्यों सभी तो समान ही संतुष्टि देने वाले हैं।

उदासिनता वक्र को अधिक स्पष्ट समझने के लिए हम निम्न चित्र प्रस्तुत करते हैं—

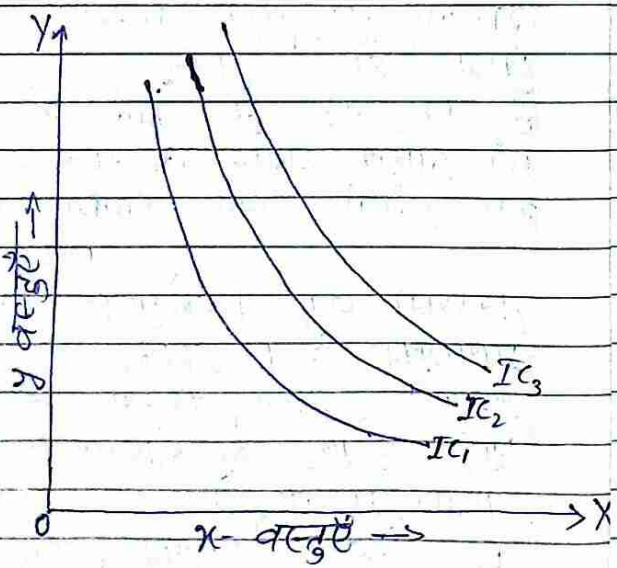

उपर्युक्त चित्र में OX अक्ष पर x वस्तुएँ तथा OY अक्ष पर y वस्तुओं को दिखाया गया है। चित्र IC_1, IC_2 तथा IC_3 उदासिनता वक्र रेखाएं हैं जो संतुष्टि के विभिन्न स्तरों को दिखाती है। प्रत्येक उदासिनता वक्र x और y वस्तुओं के ऐसे संयोगों को प्रकट करता है जिससे उपभोक्ता को समान संतुष्टि प्राप्त होती है अर्थात ऐसे संयोगों का चुनाव करते समय उपभोक्ता तटस्थ रहता है। दाहिनी ओर स्थित वक्र तटस्थता वक्र बाई ओर स्थित वक्र की अपेक्षा अधिक संतुष्टि स्तर को प्रकट करती है अर्थात IC_1 की अपेक्षा IC_2 तथा IC_2 की अपेक्षा IC_3 पर उपभोक्ता को अधिक संतुष्टि मिलती है।

Consumer's Equilibrium :- एक उपभोक्ता उस समय सन्तुलन की स्थिति में होता है जब वह अपनी रुचियों एवं दो वस्तुओं की कीमतें के निश्चित रहने पर अपनी आय को दो वस्तुओं के क्रय करने में इस ढंग से खर्च करता है कि उसे अधिकतम संतुष्टि प्राप्त हो। एक उपभोक्ता को उस समय अधिकतम संतुष्टि प्राप्त होती है जहाँ (i) तटस्थता वक्र वक्र कीमत रेखा को स्पर्श करती है।

(ii) सन्तुलन बिन्दु पर संतुष्टि अधिकतम तब होती है जब x की y के लिए सीमान्त प्रतिस्थापन दर x वस्तु की कीमत और y वस्तु की कीमत के बराबर हो अर्थात

$$MRS_{xy} = \frac{P_x}{P_y}$$

(iii) तटस्थता वक्र मूल बिन्दु के प्रति उन्नतोदर (convex) होनी चाहिए ताकि सन्तुलन बिन्दु पर सीमान्त प्रतिस्थापन दर घटती अवस्था में हो।

* Assumptions of Indifference curve :-

i) उपभोक्ता की आय स्थिर एवं निश्चित है।
ii) उपभोक्ता को अपने तटस्थता मानचित्रों की पूर्ण जानकारी है।
iii) उपभोक्ता को सभी वस्तुओं का बाजार मूल्य मालूम है।
iv) बाजार में सम्बन्धित वस्तुओं x तथा y की कीमतें स्थिर हैं।
v) सभी वस्तुएँ समरूप तथा विभाजनीय हैं।
vi) बाजार में पूर्ण प्रतियोगिता है।
vii) उपभोक्ता की आदत एवं रुचियों में कोई परिवर्तन नहीं होता है।
viii) उपभोक्ता विवेकशील है। वह दी वस्तुओं को खरीदकर अपनी संतुष्टि को अधिकतम बनाता है।

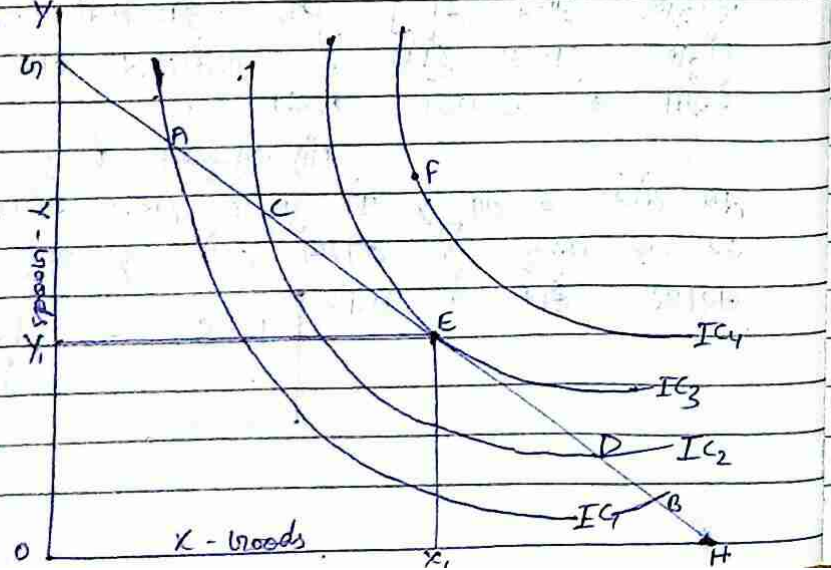

उपर्युक्त मान्यताएँ दी होने पर हम उपभोक्ता संतुलन स्थिति को हम निम्न चित्र से भी स्पष्ट करते हैं-

चित्र में GH कीमत रेखा तथा IC_1, IC_2, IC_3, तथा IC_4 चार उदासिनता वक्र वस्तुओं के विभिन्न संयोगों को प्रदर्शित करता है। GH वह कीमत रेखा है जिसपर उपभोक्ता अपनी आय और वस्तुओं की कीमत दी होने पर खरीद सकता है। IC_4 पर स्थित संयोग बिन्दु F का उपभोग वह नहीं कर सकता क्योंकि उसकी कीमत उसके आय से अधिक है। IC_1 पर स्थित संयोग A और B की तुलना में उपभोक्ता C और D संयोग को पसंद करेगा क्योंकि IC_2 पर स्थित संयोग IC_1 की तुलना में अधिक संतुष्टि प्रदान करेगा। सबसे ऊँचा तटस्थता वक्र जिसपर उपभोक्ता कीमत रेखा GH के साथ पहुँच सकता है वह है IC_3। अतः IC_3 पर स्थित संयोग E उपभोक्ता के लिए सर्वश्रेष्ठ होगा क्योंकि अन्य सभी संयोग E की तुलना में उसे कम संतुष्टि प्रदान करता है।

अतः चित्र में बिन्दु E उपभोक्ता के लिए साम्य स्थिति है।

* Critical Evaluation Of Indifference Curve :-

उदासिनता वक्र विश्लेषण की मुख्य आलोचनाएँ निम्नलिखित प्रकार से की जाती है-

i) Prof. Robertson ने उदासिनता वक्र विश्लेषण की आलोचना करते हुए कहा कि 'Old wine in new bottle.' उसने कहा कि यह सिद्धान्त भी मार्शल की पुरानी विचारधारा का परिवर्तित रूप प्रस्तुत करता है।

ii) Prof. Armstrong ने इसकी आलोचना करते हुए कहा

कि Hicks ने उदासिनता शब्द की सही एवं एक निश्चित व्याख्या नहीं की। Hicks के अनुसार दो वस्तुओं के संयोग का चुनाव करते समय उपभोक्ता उदासिन होता है वास्तविकता तो यह है कि वह उन दोनों में अंतर ही नहीं कर पाता है।

iii) Hicks ने उपभोक्ता के उपभोग क्षेत्र को यह कहकर सीमित कर दिया कि उदासिनता वक्र केवल दो वस्तुओं के उपभोग से संबंधित स्थिति की व्याख्या करता है।

iv) Prof. Samuelson ने इस विश्लेषण को अवास्तविक बताते हुए कहा कि यह दुर्बल क्रमबद्धता (weak ordering) की मान्यता पर आधारित है जिसके कारण उपभोक्ता दो वस्तुओं में से किसी एक का चुनाव नहीं कर पाता है।

v) आलोचकों के अनुसार उपभोक्ता सदैव विवेकशील नहीं सामाजिक रीति-रिवाज, समय एवं परिस्थितियाँ उसके व्यवहार को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है।

vi) आलोचकों ने उदासिनता वक्र के पूर्ण प्रतियोगी तथा समान वस्तुओं की अवास्तविक मान्यताओं की आलोचना की है।

vii) न्यूमैन तथा मार्जेन्सटर्न के अनुसार उदासिनता वक्र सामान्य स्थितियों में कार्य करती है जबकि उपभोक्ता का व्यवहार अनिश्चित एवं जोखिम भरा होता है